राष्ट्रोपनिषत्

रचयिता
स्व. आचार्य डॉ. नारायणशास्त्री काङ्कर विद्यालङ्कारः
(महामहिम–राष्ट्रपति–सम्मानित)

हिन्दी-रूपान्तरण-कर्त्री
सौ. श्रीमती इन्दु शर्मा
एम.ए., शिक्षाचार्या

अंग्रेजी-रूपान्तरण-कर्त्ता
महामण्डलेश्वरः स्वामी श्री ज्ञानेश्वरपुरी
विश्वगुरुदीप आश्रम शोध संस्थानम्, जयपुरम्

नारी चेत् स्वयमात्मानं, सद्यः परिचिनो तु हि ।
प्रचण्डा चण्डिका भूत्वा, दुष्टानेव विनाशयेत ॥२४७॥

यदि नारी स्वयं आपको तत्काल पहिचान ले तो वह प्रचण्ड चण्डिका बन कर दुष्टों को ही विनष्ट कर डाले ।

If a woman would recognise herself immediately, then she would destroy the wicked like the raging moon.

नारी विश्व –प्रतिष्ठैका, तां विना पुरुषो नहि ।
नारी–पुरषयोरैक्यं, विश्वकल्याणकारकम् ॥२४८॥

नारी विश्व की एक प्रतिष्ठा है । उसके बिना पुरुष नहीं । नारी और पुरुष की एकता विश्व का कल्याण करने वाली होती है ।

Woman is a base of the world, not the man. The prosperity of the world lies in the unity of a woman and a man.

नास्ति कालात् परः कश्चित्, कालो हि सर्वतो महान् ।
उत्पत्ति – प्रलयौ तस्माद्, भवतो नात्र संशयः ॥२४९॥

काल से बढ़ कर कोई नहीं है । काल ही सबसे महान् है । उस काल से ही उत्पत्ति और प्रलय होते हैं । इसमें सन्देह नहीं है ।

Nobody is higher than the Time. Time is the greatest. There is no doubt that from Time everything is created and in it all is destroyed.

नास्ति ज्ञानं विना मुक्तिर्, ज्ञानं पुस्तक–संस्थितम् ।

पुस्तक – क्षति – कर्त्तारः, सर्वज्ञान–विलोपकाः ॥२५०॥

ज्ञान के बिना मुक्ति नहीं है और ज्ञान पुस्तकों में रहता है । पुस्तकों को क्षति करने वाले तो सारे ज्ञान का लोप करने वाले बन जाते हैं ।

There is no freedom without knowledge. Knowledge is in the books. Those who destroy the books became annihilators all knowledge.

नास्ति मातृसमा काचित्, सुखशान्ति–प्रदायिनी ।

तामनादृत्य कः स्वस्य, सुखं शान्तिं हिनस्ति न ? ॥२५१॥

माँ के समान सुख–शान्ति दायक कोई नहीं है । उस माँ का अनादर करके कौन अपनी सुख शान्ति को नष्ट नहीं करता हैं ?

Nobody can give peace and happiness like a mother. Who does not destroy his peace and happiness by not showing her respect?

नास्ति स्त्री–सदृशी काऽन्या, सहिष्णुश्च दयावती ।

परार्थमेव जीवन्ती, सर्वदा सा हि तुष्यति ॥२५२॥

स्त्री के समान कोई दूसरी वस्तु सहनशील और दयावान् नहीं है । दूसरों के लिये सदा ही जीती हुई वह सन्तुष्ट रहती है ।

There is nobody as tolerant and kind as a woman. She lives for others and is always satisfied.

नास्तीश्वर–समः कश्चित्, कष्टात् त्रातुं बली महान् ।

अतो नित्यं स आराध्यः, पूज्यो वन्द्यः पुनः पुनः ॥२५३॥

ईश्वर के समान कोई कष्ट से बचाने के लिये महान् बली नहीं है । अतः नित्य उसकी पुनः पुनः आराधना, पूजा और वन्दना करनी चाहिये ।

There is nobody more powerful than God who can save (one) from the troubles. Therefore, worship, prayer and respect should be constantly given to God, again and again.